

हनुमान चालीसा

॥ दोहा ॥

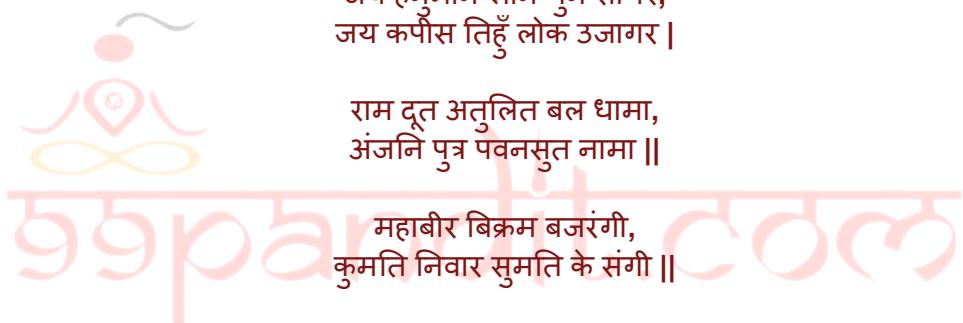
श्रीगुरु चरन सरोज रज,
निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनतँ रघुबर बिमल जसु,
जो दायकु फल चारि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके,
सुमिरौं पवन-कुमार ।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं,
हरहु कलेस बिकार ॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर,
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ।

राम दूत अतुलित बल धामा,
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ॥



कंचन बरन बिराज सुबेसा,
कानन कुण्डल कुचित केसा ॥

हाथ ब्रज अरु द्वजा बिराजै,
काँधे मूँज जनेऊ साजै ।

शंकर स्वयं/सुवन केसरी नंदन,
तेज प्रताप महा जगवंदन ॥

विद्यावान गुनी अति चातुर,
राम काज करिबे को आतुर ।

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया,
राम लखन सौता मन बसिया ॥

सृक्षम रूप धरि सियहिं दिखावा,
बिकट रूप धरि लंक जरावा ।

भीम रूप धरि असुर संहारे,
रामचन्द्र के काज सँवारे ॥

लाय सजीवन लखन जियाए,
श्री रघुबीर हरषि उर लाये ।

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई,
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥

सहस बदन तुम्हारो जस गावैं,
अस कहि श्रीपति कंठ लगावै ।

सनकादिक ब्रह्मादि मुग्नीसा,
नारद सारद सहित अहोसा ॥

जम कबेर दिगपाल जहाँ ते,
कबि कौबिद कहि सके कहाँ ते ।

तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा,
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥

तुम्हारो मंत्र विभीषण माना,
लकेश्वर भए सब जग जाना ।

जुग सहस्त्र जोजन पर भानु,
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥

प्रभ मुद्रिका मेलि मुख माहीं,
जलाधि लाँधि गये अचरज नाहीं ।

दुर्गम काज जगत के जेते,
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥

राम दुआरे तुम रखवारे,
होत न आजा बिनु पैसारे ।

सब सुख लहै तुम्हारी सरना,
तुम रक्षक काहू को डरना ॥

आपन तेज सम्हारो आपै,
तीनों लोक हाँक तै कांपै ।

भूत पिशाच निकट नहिं आवै,
महावीर जब नाम सुनावै ॥

नासै रोग हरै सब पीरा,
जपत निरंतर हनुमत बीरा ।

संकट तै हनुमान छुड़ावै,
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥

सब पर राम तपस्वी राजा,
तिनके काज सकल तुम साजा ।

और मनोरथ जो कोई लावै,
सोई अमित जीवन फल पावै ॥

चारों जुग परताप तुम्हारा,
है परसिद्ध जगत उजियारा ।

साधु सन्त के तुम रखवारे,
असुर निकंदन राम दुलारे ॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता,
अस बर दीन जानकी माता ।

राम रसायन तुम्हरे पासा,
सदा रहो रघुपति के दासा ॥
तुम्हरे भजन राम को पावै,
जन्म जन्म के दुख बिसरावै ।

अंतकाल रघुवरपुर जाई,
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥

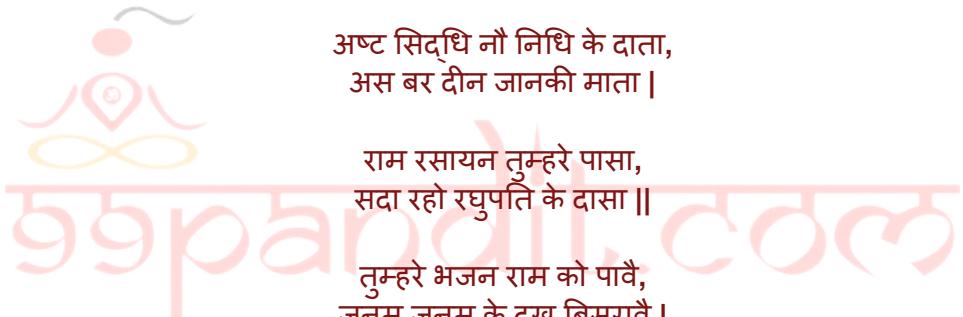
और देवता चित्त न धरई,
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ।

संकट कटै मिटै सब पीरा,
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥

जै जै जै हनुमान गोसाई,
कृपा करहु गुरुदेव की नाई ।

जो सत बार पाठ कर कोई,
छूटहि बंदि महा सुख होई ॥

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा,



होय सिद्धि साखी गौरीसा ।

तलसीदास सदा हरि चेरा,
कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥

॥ दोहा ॥

पवन तनय संकट हरन,
मंगल मूरति रूप ।

राम लखन सीता सहित,
हृदय बसहु सुर भूप ॥

